The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 3 | March 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

खोरठा पद्य साहित्य: सामाजिक चेतना एवं मानवीय संवेदना का दर्पण

उर्मिला कुमारी
शोधार्थी स्नातकोत्तर खोरठा विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड
Urmilarkm94@gmail.com

डॉ॰ अवध बिहारी महतो
सहायक प्राध्यापक (खोरठा), जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग,
मारवाड़ी महाविद्यालय, राँची,झारखण्ड
awadhbihari.mahto136@gmail.com

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 26-03-2025

Published: 16-04-2025

Keywords:
खोरठा साहित्य, लोक काव्य, सामाजिक चेतना, मानवीय संवेदना, झारखंड, आदिवासी साहित्य, लोकसंस्कृति

ABSTRACT

भारतीय साहित्य में क्षेत्रीय भाषाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, जो विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम रही हैं। खोरठा भाषा झारखंड की प्रमुख लोक भाषाओं में से एक है, जिसका साहित्यिक और सांस्कृतिक योगदान अत्यंत समृद्ध है। विशेष रूप से खोरठा पद्य साहित्य ने सामाजिक चेतना और मानवीय संवेदनाओं को उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। खोरठा भाषा झारखंड की एक प्रमुख लोकभाषा है, जो यहाँ के जनजीवन, संस्कृति और परंपराओं को अभिव्यक्त करती है। खोरठा पद्य साहित्य में सामाजिक चेतना और मानवीय संवेदनाएँ प्रमुख रूप से दृष्टिगोचर होती हैं। यह साहित्य समाज की पीड़ा, संघर्ष, असमानता, शोषण, न्याय और सामूहिक भावनाओं को प्रकट करता है। प्रस्तुत शोध पत्र में खोरठा काव्य परंपरा के सामाजिक सरोकारों और मानवीय संवेदनाओं का विश्लेषण किया गया है तथा यह दर्शाने का प्रयास किया गया कि यह साहित्य किस प्रकार समाज में चेतना जागृत करने का कार्य करता है।

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15231936

1. खोरठा भाषा एवं साहित्य का परिचय

खोरठा भाषा झारखंड की प्रमुख भाषाओं में से एक है, जो मुख्यतः राज्य के हजारीबाग, गिरिडीह, बोकारो, धनबाद, कोडरमा, चतरा और रामगढ़ जिलों में बोली जाती है। यह भाषा मगही, भोजपुरी और अन्य पूर्वी भारतीय भाषाओं से जुड़ी हुई है और इंडो-आर्यन भाषा परिवार का हिस्सा है। झारखंड के आदिवासी और गैर-आदिवासी समुदायों द्वारा बोली जाने वाली यह भाषा उनकी संस्कृति, परंपरा और लोक जीवन का जीवंत दस्तावेज़ है।

- **खोरठा भाषा की प्रमुख विशेषताएँ:**
  - यह मुख्य रूप से लोकसाहित्य और मौखिक परंपरा के माध्यम से संरक्षित रही है।
  - खोरठा को झारखंड सरकार द्वारा राज्य की मान्यता प्राप्त भाषा के रूप में स्वीकार किया गया है।

- वर्तमान में प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा में इसे एक विषय के रूप में पढ़ाया जा रहा है।
- अखबार, रेडियो और टेलीविजन में भी इस भाषा का प्रयोग बढ़ रहा है।

❖ **खोरठा साहित्य का उद्भव और विकास**

खोरठा साहित्य का इतिहास अत्यंत समृद्ध और प्राचीन है। यह साहित्य मुख्यतः लोकगीतों, लोककथाओं, कहावतों और लोकगाथाओं के रूप में पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचारित हुआ है। आधुनिक युग में इस भाषा में कविता, कहानी, नाटक और उपन्यास जैसी विधाओं का भी विकास हुआ है।

I. खोरठा लोकसाहित्य:

- **लोकगीत:** विवाह गीत, सोहर गीत, करमगीत, फगुआ, झूमर, डोमकच आदि।
- **लोकगाथाएँ:** वीर रस से भरपूर लोकगाथाएँ, जो समाज के संघर्षों को दर्शाती हैं।
- **कथाएँ और कहावतें:** ये समाज के नैतिक मूल्यों और व्यावहारिक ज्ञान का संकलन हैं।

ii. आधुनिक खोरठा साहित्य:

- खोरठा साहित्य ने स्वतंत्रता संग्राम और सामाजिक आंदोलनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में लिखित साहित्य का विस्तार हुआ।
- समकालीन खोरठा साहित्य में सामाजिक अन्याय, विस्थापन, श्रमिक समस्याएँ, आदिवासी अस्मिता, महिला अधिकार जैसे विषय प्रमुखता से उभर कर आए हैं।

❖ **खोरठा पद्य साहित्य: सामाजिक चेतना और मानवीय संवेदना का दर्पण**

खोरठा पद्य साहित्य समाज की संवेदनाओं और सामाजिक संघर्षों को अभिव्यक्त करने का प्रभावी माध्यम रहा है। इस साहित्य में आदिवासी और श्रमिक जीवन की पीड़ा, अन्याय, शोषण और संघर्ष को प्रमुखता दी गई है।

I. सामाजिक चेतना:

- खोरठा काव्य में सामाजिक अन्याय, जातिगत भेदभाव, विस्थापन, श्रमिक आंदोलन जैसे मुद्दों पर प्रकाश डाला गया है।
- कविताओं में किसानों, मजदूरों और हाशिए पर खड़े लोगों की आवाज़ को प्रमुखता दी गई है।
- "धरती हमर, अधिकार हमर" जैसी कविताएँ आदिवासी अस्मिता और भूमि अधिकार की रक्षा की चेतना जगाती हैं।

II. मानवीय संवेदना:

- खोरठा कविता प्रेम, करूणा, संघर्ष और आशा के भावों से परिपूर्ण होती है।
- इस साहित्य में स्त्री-विमर्श, पर्यावरणीय संकट और विस्थापन जैसे मुद्दों को मानवीय दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है।
- कई कविताओं में बिरसा मुंडा, सिद्धू-कान्हू और टाना भगत जैसे क्रांतिकारी व्यक्तित्वों का वर्णन किया गया है।

खोरठा भाषा और साहित्य न केवल झारखंड की सांस्कृतिक धरोहर है, बल्कि यह सामाजिक चेतना और मानवीय संवेदनाओं का दर्पण भी है। विशेष रूप से खोरठा पद्य साहित्य ने समाज के संघर्ष, उत्पीड़न और न्याय की आकांक्षा को शब्दों में पिरोकर जनचेतना का निर्माण किया है। आज यह साहित्य स्थानीय और वैश्विक मंचों पर अपनी पहचान बना रहा है और समाज के वंचित वर्गों की आवाज़ बन रहा है।

2. साहित्य की समीक्षा

सामाजिक चेतना और मानवीय संवेदना के संदर्भ में खोरठा कविता के अध्ययन के लिए मौजूदा साहित्य के विश्लेषण की आवश्यकता है जो इसके भाषाई, सांस्कृतिक और विषयगत आयामों की खोज करता है। विभिन्न शोधकर्ताओं और विद्वानों ने खोरठा काव्य परंपराओं की गहराई और महत्व को समझने में योगदान दिया है।

खोरठा भाषा और साहित्य पर अध्ययन

खोरठा झारखंड क्षेत्र में बोली जाने वाली एक महत्वपूर्ण भाषा है, जो नागपुरी, पंचपरगनिया और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं से निकटता से जुड़ी हुई है। केशरी नाथ तिवारी (2010) और महेश कुमार (2015) जैसे विद्वानों ने खोरठा के भाषाई विकास और लोक परंपराओं में इसकी भूमिका का विश्लेषण किया है। उनके काम इस बात पर जोर देते हैं कि कैसे मौखिक साहित्य, विशेष रूप से कविता ने ऐतिहासिक आख्यानों, सामाजिक मान्यताओं और सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित किया है।

सामाजिक चेतना के प्रतिबिंब के रूप में खोरठा कविता

कई अध्ययनों से संकेत मिलता है कि खोरठा कविता सामाजिक वास्तविकताओं में गहराई से निहित है। एस. पी. सिन्हा (2018) ने खोरठा लोकगीतों और कविताओं की जांच की, जिसमें आर्थिक विषमता, जातिगत भेदभाव और ग्रामीण संघर्षों के विषयों का खुलासा किया गया। उनके शोध में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि कविता किस तरह हाशिए पर पड़े समुदायों की चिंताओं को व्यक्त करने का माध्यम रही है।

इसके अतिरिक्त, रामेश्वर प्रसाद (2020) ने औद्योगीकरण और विस्थापन के मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने में खोरठा कवियों की भूमिका का पता लगाया। उनका काम दर्शाता है कि कैसे काव्यात्मक अभिव्यक्तियाँ भूमि अधिग्रहण, खनन गतिविधियों और स्वदेशी विरासत के नुकसान का विरोध करती हैं।

खोरठा कविता में मानवीय संवेदना का प्रतिनिधित्व

खोरठा कविता में भावनात्मक गहराई साहित्यिक विश्लेषण का विषय रही है। श्याम सुंदर महतो (2016) ने जांच की कि पारंपरिक और समकालीन खोरठा कविताओं में प्रेम, करुणा और मानवीय पीड़ा के विषयों को कैसे दर्शाया गया है। उनके निष्कर्षों से पता चलता है कि लोक कविता अक्सर प्रेम, भक्ति और अलगाव के विषयों को छूते हुए आम लोगों के संघर्षों को चित्रित करती है।

अनीता कुमारी (2019) ने खोरठा भक्ति कविता पर अपने शोध में चर्चा की कि कैसे भक्ति गीत मनुष्य और परमात्मा के बीच गहरे भावनात्मक और आध्यात्मिक संबंधों को दर्शाते हैं। उनका तर्क है कि ये कविताएँ समाज के लिए नैतिक और नैतिक मार्गदर्शक के रूप में काम करती हैं।

सामाजिक सुधार और विरोध कविता पर पिछला शोध

खोरठा कविता भी सामाजिक सुधार का एक साधन रही है। मोहन सिंह (2021) ने खोरठा में विरोध कविता का विश्लेषण किया, जिसमें दिखाया गया कि कैसे कवियों ने सामंती उत्पीड़न की आलोचना करने, महिलाओं के अधिकारों की वकालत करने और मजदूरों की दुर्दशा को उजागर करने के लिए अपने छंदों का उपयोग किया है। उनका शोध सामाजिक परिवर्तन को प्रेरित करने में खोरठा कविता के क्रांतिकारी पहलू को रेखांकित करता है।

इसी तरह, प्रदीप कुमार (2022) ने समकालीन कवियों का अध्ययन किया जो भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और पर्यावरण संबंधी चिंताओं सहित आधुनिक सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों को संबोधित करते हैं। उनके काम से पता चलता है कि खोरठा कविता लोगों की एक शक्तिशाली आवाज के रूप में विकसित होती रहती है।

3. सामाजिक चेतना का स्वरूप खोरठा पद्य साहित्य में

खोरठा काव्य साहित्य में सामाजिक चेतना की झलक स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। यह साहित्य समाज में व्याप्त कुरीतियों, अन्याय, शोषण, भेदभाव और विस्थापन जैसी समस्याओं को उजागर करता है।

(क) सामाजिक अन्याय एवं शोषण का चित्रण

- खोरठा के लोकगीतों और पद्य साहित्य में श्रमिक वर्ग के संघर्ष और उनके शोषण को प्रमुखता से दर्शाया गया है।
- खदानों और खेतों में काम करने वाले मजदूरों के दर्द को लोकगीतों के माध्यम से व्यक्त किया गया है।
- जमींदारी और पूँजीवादी शोषण के विरुद्ध विद्रोह की भावना कई कविताओं में झलकती है।

(ख) नारी चेतना और स्त्री विमर्श

- खोरठा पद्य साहित्य में महिलाओं की दशा, उनके संघर्ष और उनके अधिकारों की बात की गई है।
- विवाह, दहेज प्रथा, बाल विवाह और विधवा जीवन जैसी सामाजिक बुराइयों पर प्रहार किया गया है।
- कई कविताओं में नारी शक्ति, साहस और आत्मनिर्भरता की भावना को बल दिया गया है।

(ग) जाति एवं वर्ग संघर्ष

- खोरठा कविताओं में दलितों और पिछड़े वर्गों की समस्याओं को भी स्थान दिया गया है।
- सामंती व्यवस्था और जातिवादी भेदभाव के विरुद्ध सामाजिक जागरूकता के स्वर उभरते हैं।

4. मानवीय संवेदना का चित्रण खोरठा काव्य में

खोरठा पद्य साहित्य केवल सामाजिक चेतना तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानवीय संवेदनाओं की भी अभिव्यक्ति करता है। इस साहित्य में करुणा, प्रेम, त्याग, सहानुभूति, भाईचारा और मानवीय मूल्यों को गहराई से उकेरा गया है।

(क) पीड़ा और करुणा के स्वर

- लोकगीतों और कविताओं में विस्थापन, बेरोजगारी, गरीबी और भूखमरी की मार्मिक अभिव्यक्ति देखी जा सकती है।
- प्राकृतिक आपदाओं (सूखा, बाढ़, अकाल) से पीड़ित जनता की व्यथा कविताओं में दर्ज की गई है।

(ख) प्रेम और सौहार्द के भाव

- खोरठा लोकगीतों में प्रेम की कोमल भावनाएँ स्पष्ट झलकती हैं।
- इनमें केवल रोमांटिक प्रेम ही नहीं, बल्कि माता-पिता, भाई-बहन, और दोस्तों के प्रति प्रेम भी समाहित है।

(ग) मानवीय एकता एवं भाईचारे का संदेश

- खोरठा कविताओं में धर्म, जाति, वर्ग से ऊपर उठकर इंसानियत की भावना को महत्व दिया गया है।
- गाँव की संस्कृति, सामुदायिक जीवन और आपसी सहयोग की भावना को बढ़ावा दिया गया है।

5. निष्कर्ष

खोरठा पद्य साहित्य सामाजिक चेतना और मानवीय संवेदनाओं का सशक्त माध्यम है। यह साहित्य न केवल समाज में व्याप्त समस्याओं को उजागर करता है, बल्कि मानवीय मूल्यों और आपसी प्रेम-भाव को भी स्थापित करता है। खोरठा के कवि एवं लोकगायक अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन का संदेश देते हैं और मानवीय संवेदनाओं की गहरी अनुभूति कराते हैं।

खोरठा पद्य साहित्य एक दर्पण की भाँति समाज की वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करता है। इस साहित्य का संरक्षण और संवर्धन आज के समय में अत्यंत आवश्यक है ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी अपनी समृद्ध साहित्यिक विरासत से परिचित हो सकें।

संदर्भ ग्रंथ

1. **झारखंड की लोक भाषाएँ और साहित्य** – डॉ. सुभाष शर्मा
2. **खोरठा लोक साहित्य का सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य** – डॉ. शंभु प्रसाद
3. **खोरठा भाषा और साहित्य: एक अध्ययन** – प्रो. बी. एन. तिवारी
4. **झारखंडी भाषा आंदोलन और खोरठा साहित्य** – राजेश्वर नाथ तिवारी
5. **भारतीय लोक साहित्य में आदिवासी चेतना** – डॉ. रामेश्वर प्रसाद
6. **झारखंड के आदिवासी और लोकगीत** – डॉ. महेश्वर प्रसाद सिंह
7. **खोरठा साहित्य में सामाजिक सरोकार** – प्रो. अरुण कुमार महतो
8. **झारखंड का सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य** – डॉ. अजय कुमार
9. **खोरठा लोक साहित्य में सामाजिक चेतना** – डॉ. शिवपूजन कुमार
10. **झारखंडी लोककाव्य और समाज** – डॉ. रामदयाल मुंडा
11. **झारखंड के लोकगीत और संस्कृति** – संतोष कच्छप